कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 10, (मार्च, 2024)
पृष्ठ संख्या 66–67

संकर बाजरा की उन्नत खेती

डॉ महेंद्र प्रताप सिंह, डॉ रमेश पाल, डॉ सुनील, इंजी. सत्यार्थम, एवं कमल सिंह
सहायक प्राध्यापक
कृषि विज्ञान और इंजीनियरिंग स्कूल
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश), भारत।
Email Id: mahendraarya7@gmail.com

बाजरा के पौधों का प्रयोग हरे चारे अथवा सूखे चारे के रूप में पशुओं को खिलाने के लिए चारे का प्रयोग किया जाता है। देश की गरीब जनता का मुख्य भोज्य पदार्थ है। बाजरे का प्रयोग उबाल कर अथवा भूनकर खाया जाता है। बाजरे का दलिया बहुत ही पौष्टिक एवं सुपाच्य होता है इसका दाना दूध देने वाले पशुओं तथा मुर्गियों को भी खिलाया जाता है। बाजरा के दाने में 11.5 प्रतिशत प्रोटीन, 2.6 प्रतिशत वसा, 68 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट तथा 2.5 प्रतिशत खनिज लवण पाए जाते है।

भूमि एवं भूमि की तैयारी :

सामान्यतः बाजरा की फसल अच्छी जलनिकास वाली समस्त प्रकार की भूमियों में उगाई जा सकती है। कपास की काली मिट्टियों, मटियार दोमट से बलुई तथा कंकरीली मृदाओं में भी बाजरा की फसल उगाई जाती है। बाजरा की फसल के लिए आधिक उपजाऊ भूमि की आवश्यकता नही होती है। रबी फसल की कटाई के उपरांत एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से अप्रैल–मई में गहरी जुताई कर देनी चाहिए।

वर्षा प्रारम्भ होने के पश्चात मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने के पश्चात 2–3 जुताइयाँ देशी हल से अथवा हैरो से कर देनी चाहिये। मिट्टी को भुरभुरा तथा समतल बनाने के लिए प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य लगा देना चाहिए।

उन्नतशील प्रजातियाँ :

सुपर बॉस, 86 एम 86, 86 एम 64, प्रो एग्रो 9444, जे के बी एच 676, जे के 1051, 86 एम 1, पूसा –23, पूसा –322, राज –171, डब्लू सी सी –75, आई सी टी पी –8203

बीजदर एवं अन्तरण :

बीजदार–

(शुद्ध फसल)	:	4–5 किग्रा. प्रति हेक्टेयर
(मिश्रित फसल)	:	2–3 किग्रा. प्रति हेक्टेयर

अन्तरण–

पंक्ति से पंक्ति की दूरी	:	45 सेमी.
पौधों से पौधों की दूरी	:	15 सेमी.

बोने का समय एवं विधि :

जुताई के द्वतीय सप्ताह से जुलाई का त्रतीय सप्ताह सामान्यतः बाजरा की बुआई छिड़कवाँ विधि द्वारा की जाती है परन्तु हल के पीछे कूँड में बुआई करने से आधिक उपज प्राप्त होती है।

उर्वरक प्रबंध :

संकर बाजरा की फसल को अन्य फसलों की अपेक्षा कम पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। संकर बाजरा को 100–120 किग्रा. नत्रजन, 50–60 किग्रा. फास्फोरस तथा 40–50 पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन की एक तिहाई

मात्रा, फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा बाई के समय प्रयोग करना चाहिए। शेष नत्रजन की दो तिहाई मात्रा दो बार में बुआई के 25–30 तथा 40–45 दिन के उपरांत खड़ी फसल में छिड़काव कर देना चाहिए। बारानी क्षेत्रों में नत्रजन, फास्फोरस तथा पोटाश उर्वरकों का प्रयोग बुआई के समय करना चाहिए।

सिंचाई एवं जलनिकास :

सामान्यतः बाजरा के फसल असिंचित ध्बारानी दशाओं में उगाई जाती है अशिंचित दशाओं में बाजरा की बुआई के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। खरीफ ऋतु में लंबे अन्तराल तक वर्षा न होने की स्थिति में एक–दो सिंचाई करने से आधिक उपज प्राप्त होती है

बाजरा का पौंधा जलभराव की स्थिति में शीघ्र ही मर जाता है अतः आधिक वर्षा होने की दशा में खेत से शीघ्र ही पानी निकाल देना चाहिए।

खरपरवार नियंत्रण :

बाजरा की फसल खरीफ ऋतु में उगाई जाने के कारण फसल की प्रारम्भिक अवस्था में खरपतवारो का आधिक प्रकोप होता है। खेत की 1–2 निराई खुरपी की सहायता से बुआई के 20–25 दिन उपरांत कर देनी चाहिए। खरपतवार नाशी रसायन एट्राजिन 0.05 किग्रा. (सक्रिय तत्व) प्रति हेक्टेयर की दर से 600–800 लीटर पानी में घोल कर फसल की बुआई के बाद परन्तु जमाव के पूर्व छिड़काव कर देने से खरपतवार नष्ट हो जाते है।

प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण :

संकर बाजरा की फसल में प्ररोह मक्खी, पत्ती काटने वाले कीट जैसे तना छेदक, टिड्डा, बालो वाली सूंडी, सेनाक्रमि, रस चूसने वाले कीट जैसे एफिड, प्ररोह बग, माईट, गन्ने का पायरिल्ला आदि कीट मुख्यरूप से हानि पहुंचाते है। इन कीटों के नियंत्रण के लिए 0.15 प्रतिशत थायोडान का 600–800 लीटर घोल प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करने पर पत्ती खाने वाले कीटों का नियंत्रण हो जाता है। इसके अतिरिक्त डायमेथोएट (30 ई सी) की 250 मिली., कार्बारिल (50 डब्लू पी) अथवा 375 मिली. एल्ड्रिन (20 ई सी) प्रति हेक्टेयर की दर से 600–800 लीटर पानी में घोल कर 5–7 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करना चाहिए।

प्रमुख बीमारियाँ एवं उनका नियंत्रण :

संकर बाजरा में हरितवाल रोग, अर्गट, कन्डूआ, गेरुई एवं पत्ती का ब्लास्ट रोग मुख्यरूप से हानि पहुचाते है। इन बीमारियों के नियंत्रण के लिए उचित फसलचक्र अपनाना, रोगरोधी प्रजातियों का चयन, सही समय पर बुआई तथा बीजो को थीरम एवं ऐग्रोसन जी एम 2 ग्राम प्रति किलो बीज दर से बीजों को उपचारित करना चाहिए। फफूंदीनाशक रसायन जैसे डायथेन एम 45 अथवा डायथेन जेड 78 का 0. 5 प्रतिशत घोल अथवा प्लांटवैक्स का छिड़काव करना चाहिए। रोगग्रसित पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए जिससे रोगों के प्रसार को रोका जा सकता है।

कटाई एवं मडाई :

संकर बाजरा की विभिन्न प्रजातियाँ 75–85 दिन में तैयार हो जाती है। खड़ी फसल में बालियों से काटकर खलियान में सुखाया जाता है। बालियाँ पूर्णरूप से सूख जाने के पश्चात बैलों, ट्रैक्टर अथवा थ्रेसर की सहायता की मडाई करके दाने अलग कर लिए जाते है। बालियाँ कटे हुए पौधों को हरी अथवा सूखी कड़वी के रूप में पशुओं को खिलाते है।

उपज :

देशी उन्नतशील प्रजातियों से 15–20 कुन्तल प्रति हेक्टेयर जबकि संकर प्रजातियों से 30–35 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की दर से दाने की उपज प्राप्त हो जाती है। बाजरा की कड़वी की उपज 100–125 कुन्तल प्रति हेक्टेयर प्राप्त हो जाती है।